KAMAL

KAMAL PAPER PRODUCTS

SCHOOL INTERNSHIP PROGRAMME
LESSON PLAN NOTE-BOOK
FOR

D.El.Ed. Class

Session 2019-2021

INDEX

Sr. No.	Date	Lesson No.	Topic	Pages	Sign. of the Supervisor
1	5/7/21	1	कला	1-4	
2	6/7/21	2	कला का महत्व	5-10	
3	7/7/21	3	कला का उद्देश्य	11-12	
4	8/7/21	4	नृत्य	12-19	
5	9/7/21	5	पेंटिंग	20-21	
6	10/7/21	6	खण्ड काव्य	22-23	
7	11/7/21	7	महाकाव्य	24-26	
8	13/7/21	8	गीतिकाव्य	27-28	
					checked by

2

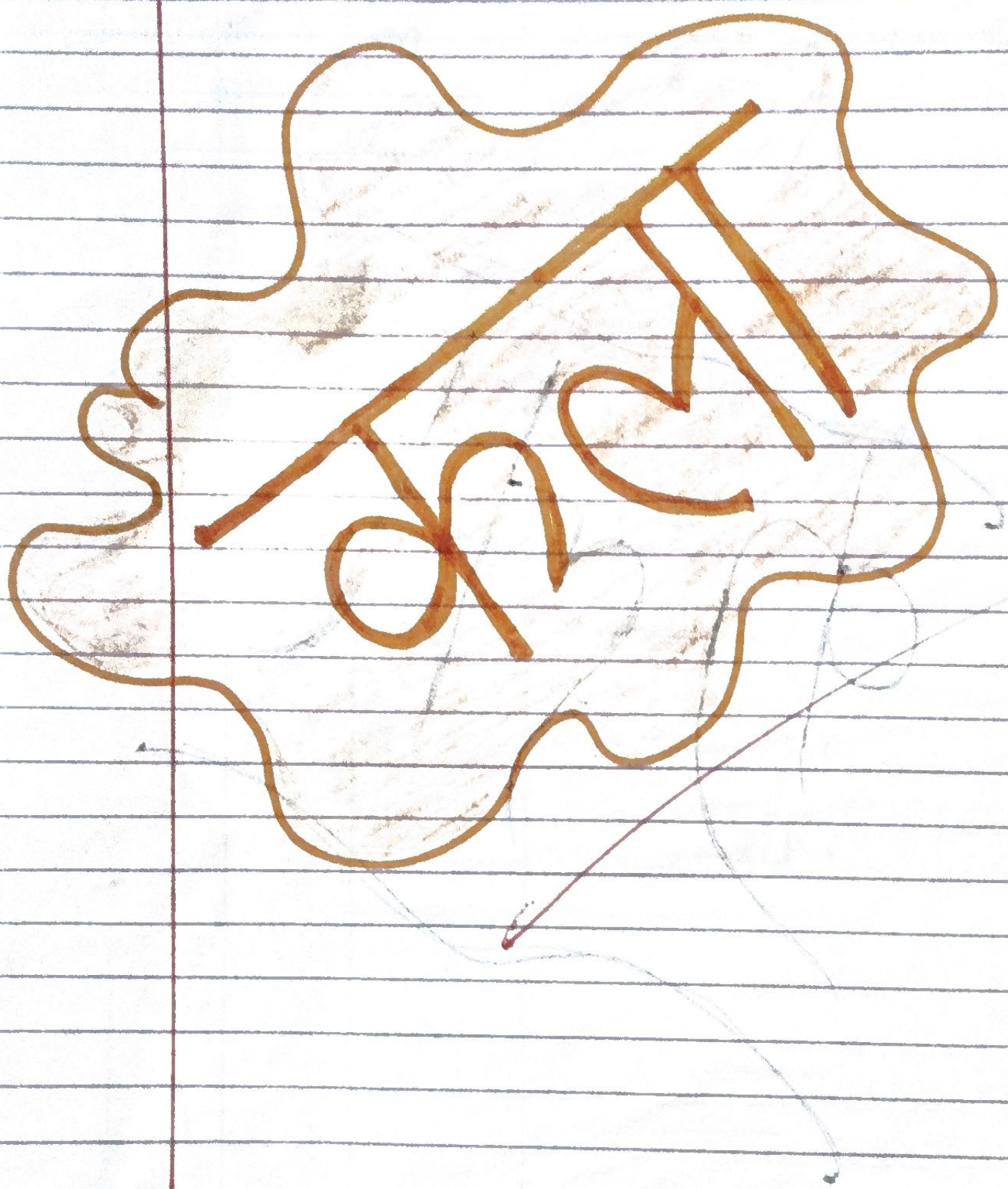

☆ कला का अर्थ -

कला शब्द की उत्पति संस्कृत अर्थ की कल धातु से हुई मानी जाती है जिसका अर्थ शब्दो का कहना, गिनना उत्पन्न करना यु कुछ नवीन रचना करना माना जाता है।

कुछ अन्य विद्वानो के मतानुसार कला शब्दो का अर्थ एक ऐसी कृति से है जो मानवीय क्रिया से उत्पन्न होती है जिसके विशेष गुण - ध्यान, पूर्ण, दृष्टि संकल्प एव स्पष्ट प्रकटन आदि है।

एक अन्य मतानुसार कला का अर्थ शिल्प अथवा कौशल की हुनर और कला कृति है एक अन्य अवधारणा के अनुसार सुंदर मधुर कोमल स्थाई प्रेरणादायक सुख देने वाला अनुभव ही कला है।

अतः - मे कहा जा सकता है कि ऐसी कलात्मक शिल्प अथवा कौशल कि प्रक्रिया से युक्त अनुभूति या सृजनात्मक सुन्दर व सुख प्रदान करने वाली हो वह कला है।

☆ कला की परिभाषाऐं -

कला के विषय मे देशी तथा विदेशी विद्वानो ने अपने विचार प्रकट करते हुऐ भिन्न-भिन्न परिभाषाऐं दी है। जिनमे से कुछ विद्वानो की परिभाषाँए अग्रलिखित है -

4

- सर जान डी के अनुसार - किसी भी वस्तु को विशेष ढंग से नई आकृति प्रदान करना है।

- मैथिलीशरण गुप्त के अनुसार - कला से जीवन का महत्व है। यदि कला जीवन को सुमार्ग पर न लाये तो वह कला क्या हुई।

- महात्मा गांधी के अनुसार - एक अनुभूति को दूसरे तक पहुंचाना ही कला है।

- टॉलस्टाय के अनुसार - कला वह माध्यम है जिसके द्वारा कलाकार अपनी भावना से दूसरो को प्रभावित करता है।

उपरोक्त परिभाषाओं के आधार पर कहा जा सकता है कि मानव विलास है उसकी इसी विश्वास ने उसके अस्तित्व का विकास किया और अन्य प्राणियो से श्रेष्ठ साबित किया टालस्टाय ने कला भावो को अभिव्यक्ति बताया है।

आदर्श पाठ

5

विषय.....

छात्र अध्यापक का नाम.....

विषय.....

उप विषय.....

रोल नं.....

कक्षा.....

तिथि.....

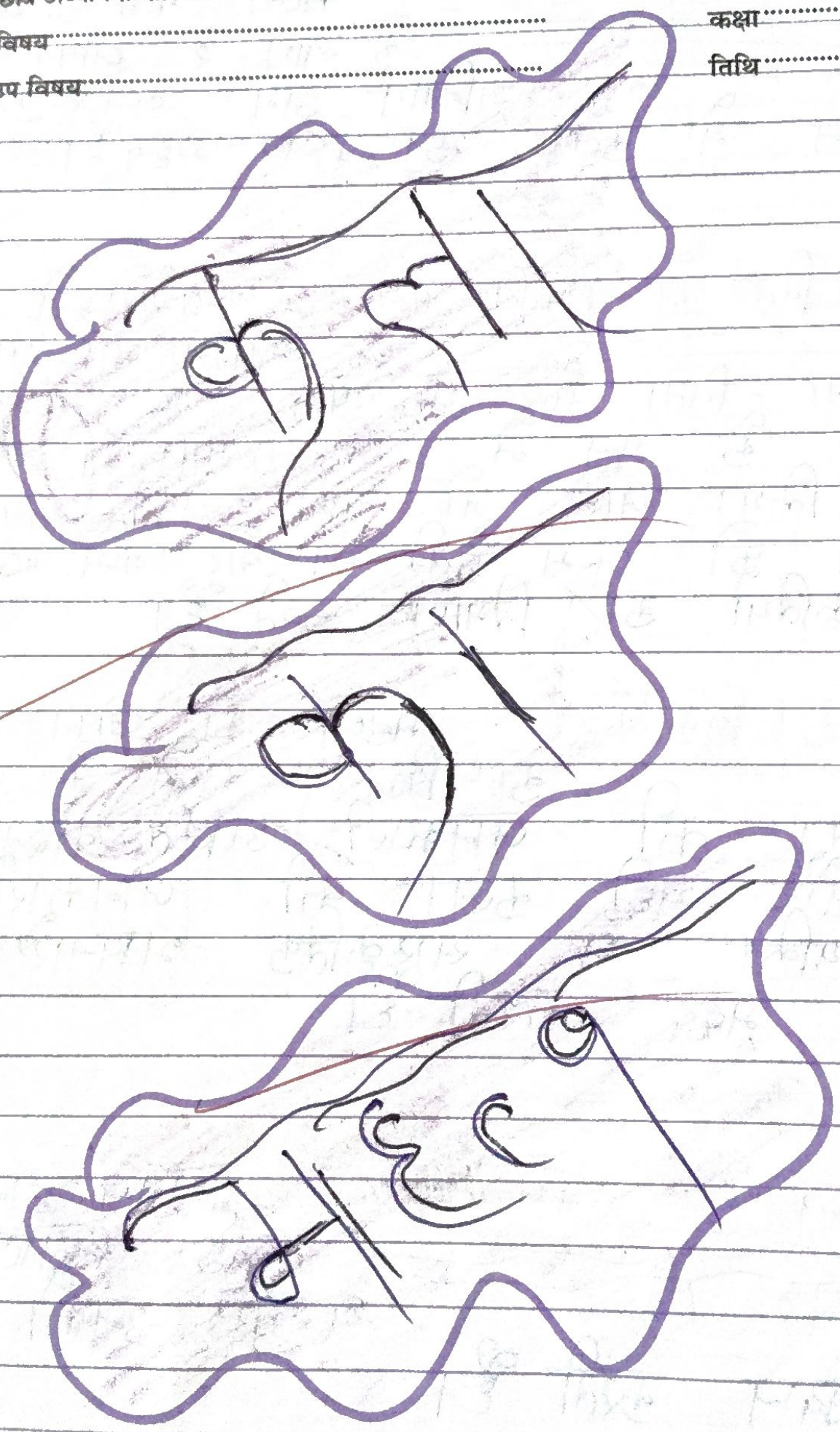

कला का महत्व - कला भावो को अभिव्यक्ति के साथ-२ जीवन का अनिवार्य अंग बन चुकी है। मानव जीवन मे कला का विशेष महत्व है।

कल्पना शक्ति को विकसित करना - बच्चों मे कल्पना शक्ति को विकसित करना माता-पिता और अध्यापक का काम है। यदि बच्चो के मन मे जो कल्पना है उसे सम्मान से साकार किया जाये तो वही उसकी सृजनशीलता को जन्म देती है और बच्चे बड़े होकर महान कृतियो का निर्माण करते है।

व्यक्तित्व का विकास - मनुष्य को जीवन व्यक्तित्व का विकास करने के लिए मानव कला की जानकारी अर्जित करना जरूरी है। और यही कला की जानकारी समाज मे और व्यक्ति मे सांस्कृतिक भावनाये विकसित करने मे मदद करती है।

आर्थिक विकास मे सहायक - मानव द्वारा बनाई गई कलात्मक वस्तुए उनको आर्थिक लाभ भी प्रदान करती है।

यौगिक विकास - कला के माध्यम से हम उद्योग के क्षेत्र में भी क्रांति सकते है। जिससे देश के औद्योगिक विकास को बल मिलता है।

तन काल में जीवन की जानकारी - कलाऐं पुरातन समाने जीवन और सभ्यता के बारे में जानकारी प्रदान करता है। किसी कला या खण्ड कला के विषय में जानकारी प्राप्त करके उस युग के जीवन के अनेक पहलुओं को जान सकते है।

शान्ति तथा सद्भावना - कला का विकास होने के कारण यह भिन्न-२ देशो के लोगो को आपस में समझने में कोई लक्ष्मण रेखा नही होती।

रोगो का विनाश - कला मानव जीवन की आँखे है। बड़े-२ साहित्यकार कवि अपनी रचनाओं द्वारा सर्व परिवर्तन लाने में सक्षम रहे है।

चरित्र का विकास - कला शिक्षा का मूलभूत उद्देश्य भी चरित्र निर्माण करना होता है। यह बच्चों में नैतिकता सहानुभूति परोपकार तथा मैत्री भाव जैसे चारित्रात्मक गुण विकसित करती है।

खाली समय का उपयोग - बालक को यदि फालतू समय में ललित कलाओं की ओर प्रेरित किया जाये तो उसका दिमाक सृजनशीलता की अभिवृद्धि होती है।

सामाजिक व सांस्कृतिक भावनाओं का विकास - कला हमें एक दूसरे के निकट लाने में मदद करती है। एक कवि या कलाकार अपनी कला के माध्यम से वह समाज में सम्मान पात्र बन जाता है।

कला के प्रकार

विद्वानों ने कला के तीन प्रकार बताए है।

आदर्श पाठ

विषय

छात्र अध्यापक का नाम .... रोल नं ....

विषय .... कक्षा ....

उप विषय .... तिथि ....

आचरण - विषयक कला

1-

2- ललित कला

3- उद्धार कला -

1 आचरण - विषयक कला - इस कला का मुख्य उद्देश्य आचरण विषयक रहता है। इसके साथ चरित्र निर्माण का भी हमारा समाज कलाकारों का विशेष सम्मान करते आया है। कलाकार अपनी कलात्मक प्रवितियों का कछु की तरह मोड़ कर अपनी शक्ति को उचित दिशा में लगाकर समाज को अद्वितीय वस्तु प्रदान करता है। वह आदर्श समाज की स्थापना में सहयोग देता है।

ललित - कला - इस कला में संगीत काव्य चित्रकारी नृत्यकला आदि शामिल है। ललित कला में आनन्द अधिक है। वह कला मन की गहराईयों को छू लेती है। संगीत मनुष्य के मन में प्रकृत कर देता है। चित्रकला हृदय की

इन्द्रियों को सुख तथा मन को कल्पना आनन्द प्रदान करती है। दृश्य कला को वस्तु वास्तव में जीवन को चित्रित करती आई है।

उदार कला - इस कला में व्याकरण तर्क रेखागणित आदि का प्रमुख स्थान माना जाता है। कला के अन्तर्गत कोई विषय ऐसा नहीं है जिसका उदार कला से सम्बन्ध न हो अनेक विषय को इस उदार कला के माध्यम से अधिक खूबसूरत बनाया जा सकता है। पाषण काल से लेकर इस आधुनिक युग में तथा कला का अपना ही महत्व रहा है। इसलिए हमारी सभ्यता और संस्कृति संसार में प्रसिद्ध हुई है।

कला के उद्देश्य

प्राथमिक स्तर पर कला शिक्षण के निम्न उद्देश्य है जो अनेक भावी जीवन के लिये तैयार करने मे सहायक सिद्द करगे।

→ कला के द्वारा अनेक कोमल मन को वांछित दिशा मे मोड़ा जा सकता है

बालक के खाली समय को किसी भी कला का जाग्रत करना के रूप मे तथा समय के सदुपयोग के रूप मे प्रयोग किया जा सकता है।

→ प्राचीन कलाओ को दिखाकर उनमे उन कलाओ के संरक्षण की भावना जाग्रति होती है तथा बच्चे उन प्राचीन चीजो को देखने मे काफी रुचि लेते है।

→ कला एक ऐसी तकनीक है जो अनपढ से लेकर शिक्षाविद तक के तारो को झंकृत कर देती है।

→ जिस प्रकार स्वस्थ रहने के लिए

औषधालय की आवश्यकता रहती है। उसी प्रकार जीवन के हर क्षेत्र को उन्नत बनाये रखने के लिये कला की ही आवश्यकता पड़ती है।

नृत्य

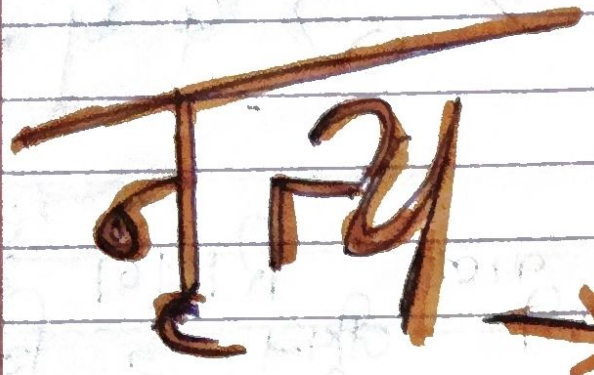

नृत्य → मनुष्य जब जंगलो मे रहता था तो वह अपने विचारो या भावो रेखा चित्रो द्वारा प्रदर्शित करता था। वे रेखा चित्र वृक्षो के पत्तो को रगडकर बनाये जाते थे। धीरे-२ जब मानव की बुद्धि का विकास हुआ तो वह अपनी बुद्धि का विकास इशारो से करने लगा। गर्दन हिलाने हाथ हिलाने आदि भावो की अभिव्यक्ति अंग सन्चलन किये जाने से ही नृत्य कला का सूत्रपात हुआ होगा। क्योकि बुद्धि का विकास होता गया। संकेतो के साथ मुद्राओ ने ले लिया।

दूसरे प्रकार भी विचार धारा नृत्य के बारे मे आते है। प्राचीन समय मे मनुष्य उत्सवो, त्योहारो के अवसरो पर बलि देवी के स्थान पर पशुओ की भी बलि देकर नृत्य का आयोजन करते थे, तथा गीत - नृत्य करकर भगवान देवी-देवताओ को प्रसन्न करते थे।

आदर्श पाठ

विषय........................

छात्र अध्यापक का नाम........................ रोल नं........................

विषय........................ कक्षा........................

उप विषय........................ तिथि........................

आगे चालकर नृत्य का विकास हुआ

अतः मे हम कह सकते है
इसलिए हम कह सकते है कि नृत्य का विकास कही से भी आयेगा यह खुशी के अवसर पर किया जाता है।

भारतीय नृत्य शैलियो मे छः प्रकार की नृत्य शैलियो का वर्णन है।

1. भरतनाट्यम
2. कत्थकली
3. मणिपुरी
4. कुचिपुडी
5. उडीसी
6. कथक

भरतनाट्यम

भरतनाट्यम नृत्य मूलतः धार्मिक नृत्य रहा है। ईश्वर की उपासना के लिए इसका प्रयोग देशवासियों द्वारा किया जाता है। कुछ लोगों की मानवता रही है कि दक्षिण भारत राष्ट्रीय नृत्य है।

शिवाजी का नृत्य से ही नृत्यों का बल मिला होगा यह भरतनाट्यम् नृत्य के शिक्षक नटुवर्न नायक लोग रहे होंगे। उनका धंधा आराधना कैसा रहा था। लेकिन अंगो के संचालन तथा भावो से इसमें कामुकता की भावना जन्म लिया है। लोग इस निरादरता की भावना से देखते है।

अलरिप्पु

इस नाटक का आरम्भ अलरिपु से होता है। इसमें प्रायः प्रार्थना या अराधना की मुद्रा होती है। जिस प्रकार हम पुष्पांजलि भेंट करते है। ठीक उसी प्रकार की यह मुद्रा होती

है। बाये से दाये ओर के अंगो का प्रदर्शन होता है। ठीक उसी प्रकार शब्दो के द्वारा ईश्वर स्तुति करने के लिये जिन शब्दो गीतो, भावो का अंग - प्रदर्शन किया जाता है। उसे शब्दम कहते है। यह इस नृत्य का तीसरा भाग कहलाता है। चौथे भाग मे पद सचालन और काव्य पक्तियो का गायन होता होता है। विभिन्न शरीर के अंगो का पूर्ण तालमेल इस नृत्य मे होता है इस प्रकार का नृत्य तीव्र गति तथा अग प्रदर्शन को तीव्र मुद्राओ के लिये विशिष्ट स्थान रखता है इस नृत्य मे शरीर के 12 अंगो का सामवेश होता है। -

कुचिपुडि नृत्य →

इस नृत्य का उद्गम स्थान कुचिपुडि नामक गाँव है यह आंध्रप्रदेश मे है इस नृत्य का नाम भी कल्पना कहलाता है जो एक प्रसिद्ध नाटक है यह नृत्य भरतनाट्यम मिलता - जुलता है लेकिन फिर भी इसकी विशिष्ट पहचान है। कुचिपुडी नृत्य मे कृष्ण व उसकी गोपियो का धार बनाया गया है। जबकि भरतनाट्यम

शिव - कृष्ण तथा तमिल साहित्य की नायिका पर आधारित है। कृष्ण लीला, पुराण, जयदेव के गीत गोविन्दम के माध्यम से प्रजा के आराधना में लिप्त होना आन्ध्र प्रदेश में होने के कारण यहाँ की भाषा तेलुगु का इसमें प्रयोग है। इस नृत्य में औरते भाग नहीं लेती है। लेकिन पुरुष ही स्त्री का रोल अदा करते है।

कुचिपुड़ि नृत्य में पैरों का संचालन विशेष तकनीक के प्रयोग किया जाता है इसके गीत कर्नाटकी है यह नृत्य अब केवल दक्षिण भारत में ही नहीं अब इसका प्रचार समस्त देशों में विभिन्न भागों से किया जाता है।

ओडिसी नृत्य →

उड़ीसा मन्दिरों की धरती है। इसका मशहूर नृत्य धार्मिक अवसरों पर किया जाता है। आज हम देखते है कि उड़ीसा के जगन्नाथपुरी, भुवनेश्वर कोणार्क के मंदिरों की मूर्ति कला ने जिस नृत्य मुद्राओं को सजीवता दी है।

यह नृत्य संस्कृत भाषा तथा उड़ीसा भाषा पर आधारित माना है। इसके नाट्य शास्त्र अभिनव दर्पण अभिनव चंद्रिका आदि ग्रन्थ सुपरिचित है। ओडिशी नृत्य स्त्री द्वारा किया जाता है। अपने कपड़े व शरीर में कसीदाकारी तथा आभूषणों से पूरी तरह सजाकर करके नृत्य करेगी। भावों को कला

आदर्श पाठ

विषय..........

छात्र अध्यापक का नाम.......... रोल नं..........

विषय.......... कक्षा..........

उप विषय.......... तिथि..........

सुरमा तथा ठोडी पर काला टीका लगाने से उसकी सुन्दरता बढ़ जाती है। इसमे अंगो की चाल चलती है। उसको चाली कहा जाता है। इस नृत्य मे मजीरा, राम कृष्ण शिव पार्वती आदि का जो नृत्य पेश किया गया है। वह अनूठी कला प्रस्तुत करती है।

मणिपुरी नृत्य →

भारत के उत्तर पूर्व मे स्थित एक शान्त एवं सुरम्य प्रदेश है। जिसको हम मणिपुरी नृत्य मूलतः मणिपुरी नामक प्रदेश का लोक नृत्य है। इस नृत्य की विषय वस्तु श्री भगवत महाभारत से उद्धृत है।

मणिपुरी प्रदेश की पहचान व शिव-पार्वती, राधा-कृष्ण और अर्जुन और चित्रागंधा के नृत्य से आती है। मणिपुरी की धरती के निवासी अपने अपने आप को अर्जुन का वंशज मानते है। इस नृत्य मे कपडे मे चमकीले अथवा रेशमी कपडे का ढीला लहंगा है जिसे कुमिन कहा जाता है।

कत्थक नृत्य →

नृत्य शैलियों में सबसे नवीन शैली कथक शैली है। यह नृत्य 18वीं शताब्दी में हुआ है। उत्तर भारतीय संगीत शास्त्रीय, उपशास्त्रीय गायन शैलियों, ठुमरी व दादरा नृत्य का अटूट संबंध है। इस शैली की शुरूआत नृत जाति लोगो मे हुई है।

कथक नृत्य के तीन पुराने प्रसिद्ध स्थल है। बनारस, जयपुर इस नृत्य तबला व पखवाज से संगीत बनता है। घुंघरू पर इसका पूरा नियंत्रण रहता है। तबले की थाप का अपना पूरा नियंत्रण है। इस नृत्य मे ज्यादा कृष्ण-चरित का चित्रण किया गया है।

इसकी वेशभूषा सामान्य रूप से चमकदार शेरवानी, चुड़ीदार, पजामा, अलंकृत टोपी तथा अंगरखे प्रयोग किया गया है।

कथकली नृत्य →

यह नृत्य दक्षिण भारत का एक प्राचीन नाटक है। कथकली शब्द की उत्पत्ति कथ और कली से हुई है। कथ और केलि का अर्थ नाटक है। इस प्रकार इस नृत्य को नाटक कहा है।

केरल तथा मालाबार मे इसका अधिक प्रचलन है। इस नृत्य मे नाच, संगीत व अभिनव का सुंदर त्रिवेणी बहती है। अभिनव मे इसका वर्णन मुद्राओं द्वारा किया जाता है।

इस नृत्य मे गायक जन नृत्य का साथ देते है। यानि गायन व नृत्य का सुंदर समन्वय होता है। शरीर का भार नृत्य व तलवो को पार्श्व पर होता है। पुराण महाभारत तथा रामायण के पात्र जिन्होने शौर्यपूर्ण कार्य पर दिखाया गया कथानको का चित्रण शैली द्वारा व्यक्त किया गया है।

भांगड़ा (पंजाबी नृत्य →

जिस प्रकार समय व स्थान के कारण पानी व बोली बदल जाती है। इसी प्रकार समय व स्थान व नृत्य को बदलना स्वाभिक है। भांगड़ा नृत्य भी उन मे उठने वाली शरीर मे होने वाली हलचलो का द्वारा नाम है।

यह नृत्य क्षेत्र के अनुसार पंजाब का नृत्य है। जिसे हम पंजाबी मे लोकनृत्य के नाम से जानते है। इस नृत्य को करने मे पुरुषो को वेशभूषा रंगदार ढीली लुंगी, ढीला, कुर्ता, गले मे पता रंग-

विरगे समान दोनो हाथो मे बधते है। कई बार तो नृत्य मे एक दूसरे के कंधो पर चढकर नृत्य करते है। इस प्रकार की साकत स्वभाविक है।

वाटर कलर पैंटिंग →

चित्रकला के एक प्रकार वाटर कलर पैंटिंग मे पानी के रंग केन्स पर ट्यूब अथवा शिशियो मे उपलब्ध होते है। डारंग शीट, पेंटिंग व ब्रश भी महत्व है।

वाटर कलर पेंटिंग ओयल पैंटिग की उपेमा सस्ती होती है। वाटर कलर ट्यूब तथा शिशियो मे बाजार मे उपलब्ध हो जाती है। माउट बोर्ड, केन्ट पेपर, ड्राइंग पेपर वाटर कलर के लिए, लम्बे बालो ब्रशो की आवश्यकता होती है। वाटर कलर पैंटिंग ओयल पैंटिंग की उपेमा सस्ती होती है। वाटर कलर ट्यूब बाजार मे उपलब्ध होती है। ताकि पानी मे डालने पर इनकी नोक लम्बी बनाकर भली प्रकार से पैंटिंग कर सके।

विषय.......................

छात्र अध्यापक का नाम .... रोल नं ....

विषय .... कक्षा ....

उप विषय .... तिथि ....

ऐक्रायलिक पैटिंग

→ ए क्रायलिक एक परिवर्तित मीडिया है। इसे कैनवेस, इलस्टेशन बोर्ड पर प्रयुक्त किया जाता है। परन्तु सुखने के पश्चात रंग वाटर प्रूफ होते है। यह रंगो द्वारा बनाई गई पैंटिंग जैसी दिखाई देती है। यह विधि लगभग एक जैसी होती है।

इस प्रकार की पैटिंग सस्ती तथा सुलभ होती है। कपड़े पर भी इसका प्रयोग सुविधापूर्वक किया जाता है। इसमें तेल मिलाने की आवश्यकता नही पड़ती पानी मे इसका प्रयोग किया गया है। इसके चपटे ब्रुश की आवश्यकता होती है। इस रंगो से बनी पैंटिंग की तरह होती है। पैंटिंग का तरीका भी प्रायः आयल की तरह का ही होता है।

खंड काव्य

खंड काव्य → संस्कृत काव्य शास्त्र मे महाकाव्य के समान खण्ड काव्य का अधिक विस्तृत वर्णन नही मिलता अलंकृत भामहि आचार्य जनक यमुह तथा दण्डी तथा खण्ड काव्य का उल्लेख नही मिलता परन्तु आचार्य रुद्र ने प्रबंध के दो भेद दिये है-

महाकाव्य और लघु काव्य

लघुकाव्य- लघुकाव्य से उनका अभिप्राय खण्ड-काव्य ही रहा होगा सर्वप्रथम आचार्य विश्वनाथ ने खण्ड काव्य की विस्तृत परिभाषा दी इनका कहना है कि किसी एक घटना को लेकर लिखा खण्ड काव्य, काव्य कहलाता है।

"तत् घटना प्रधान्यात खण्ड काव्यमिति सम्मत्य"

पं० विश्वनाथ प्रसाद दीक्षित ने खण्ड काव्य की परिभाषा दी है।

खण्ड काव्य वह है जिसकी रचना महाकाव्य के ही ढंग पर की गई है और जीसके पूर्ण जीवन ग्रहण न कर खण्ड ग्रहण किया जाता है। यह खण्ड जीवन इस प्रकार ग्रहण किया जाता

है कि रचना मे पूर्ण जीवन प्रतीत होता है।

भारतीय विद्वानो मे डा० शकुंतला दुबे ने खण्ड काव्य की परिभाषा देते हुये लिखा है।
खण्ड काव्य उस अनुभूति के स्वरूप की ओर संकेत करता है। यह खण्ड काव्य मे ही प्रचलित है। खण्ड काव्य मे जीवन सर्वगीण। चित्रण न होकर अत्यंत श्रेयस्कर एवं मार्मिक पक्ष उद्घाटन होता है।
खण्ड काव्य मे कथा प्रवाह बनाये रखने के लिये छोटी कथाओं का त्याग किया जाता है। इसमे क्रिया व्यापार की गति देने वाले ओजस्वी तर्क शताब्दी की जाती है।
आधुनिक हिन्दी काव्य मैथलिशरण गुप्त रचित पंचवटी, रामचरित मानस रचित तुलसीदास प्रसिद्ध खण्ड काव्य है।

खण्ड की विशेषताये – खण्ड काव्य मे जीवन किसी एक महत्वपूर्ण पक्ष के आधार पर कथा वस्तु का निर्माण किया जाता है।

→ खण्ड काव्य के कथानक मे एकता रहती है।

→ खण्ड काव्य मे पांच से सात तर्क होते है।

→ खण्ड काव्य विषय कोई आदर्श चरित्र जीवन समस्या से सम्बंधित होता है।

→ खण्ड काव्य मे अधिक रस हो लेकिन प्रधानता एक ही रस की होनी चाहिए।

→ खण्ड काव्य मे छन्दो की प्रधानता होती है।

→ सम्पूर्ण खण्ड काव्य छंद मे रचित होता है लेकिन यह स्थाई नियम नही है।

महाकाव्य

भारतीय काव्यशास्त्र मे काव्य के दो प्रमुख भेद है
दृश्य काव्य
श्रव्य काव्य

शैली के आधार पर श्रव्य काव्य के तीन भेद है-
पद्य - गद्य और चम्पू
पद्य काव्य के दो भेद है।

▷ प्रबंध काव्य और मुक्तक काव्य
प्रबंध काव्य के भी दो भेद है। -

महाकाव्य और खण्ड काव्य -
यह सर्वप्रथम महाकाव्य का संक्षिप्त परिचय दिया जाता है महाकाव्य साहित्य की सर्वाधिक महत्वपूर्ण विधा मानी जाती है

विषय

छात्र अध्यापक का नाम रोल नं

विषय कक्षा

उप विषय तिथि

अग्नि पुराणकार ने सर्ग-बन्धो महाकाव्य कहकर महाकाव्य सर्गों की अभिव्यक्ति को स्वीकार किया है। इसका शाब्दिक अर्थ है महान काव्य - अन्य शब्दों में हम कह सकते हैं कि महाकाव्य का कथानक नायक तथा आयाम सभी कुछ महान होना चाहिए। रामायण और महाभारत संस्कृत के दो प्राचीन महाकाव्य हैं। संस्कृत आचार्य में भामह आचार्य, दंडी, रूद्रट, हेमचंद्र आदि महाकाव्य की परिभाषा दी है —

महाकाव्य सर्गबद्ध होना चाहिए। ये सर्ग न तो छोटे होने चाहिए न ही बड़े होने चाहिए। सर्ग के अन्त में भावी कथा की सूचना छंद परिवर्तन हो।

→ कथानक इतिहास प्रसिद्ध हो अथवा किसी सज्जन से सम्बंधित हो।

→ नायक उच्च वंश का क्षत्रिय अथवा देवता हो

→ श्रृंगार वीर तथा शांत रस में से कोई रस प्रधान हो —

→ प्रकृति चित्रण तथा जीवन के अन्य प्रसंगों समावेश होनी चाहिए।

20

पश्चात विद्वानों मे अरस्तु डब्ल्यू पी केर सम्बर क्राम्बी सी. एस. वावरा डब्लु. एम. परिभाषा देने का 'प्रयास' किया है।

ये महाकाव्य एक बृहद - कथानात्मक काव्य रूप है। इसमे पात्रो कि क्रियाशील एव भयंकर कार्यो से पूर्ण जीवन की कथा होती है

संक्षेप मे हम कह सकते है कि महाकाव्य की कथावस्तु विस्तृत होती है। उसमे जीवन का व्यापक चित्रण रहता है। मानव के उदार चरित्र का चित्रण शास्त्र शैली मे किया जाता है।

निष्कर्ष -

1) महाकाव्य सर्गबद्ध होता है इसमे कम-से-कम आठ सर्ग होने चाहिए।

2) उसका नायक देवता अथवा उच्च घराने धीरोदात्त तथा गुणो युक्त पुरुष होता है।

इसमे श्रृंगार रस, शांत रस कोई एक रस प्रधान रहता है।

→ महाकाव्य का कथानक इतिहास प्रसिद्ध सज्जन होता है

→ महाकाव्य मे एक सर्ग छंद रहता है

महाकाव्य की कथा विस्तारात्मक होती है। संस्कृत और हिन्दी साहित्य मे महाकाव्य की लम्बी परम्परा रही है। संस्कृत मे रामायण तथा महाभारत अतिरिक्त कुमार सम्भव, रघुवंश महाकाव्य है। हिन्दी मे पृथ्वीराज रसो (चन्द्रबाई) रामचरितमानस तुलसीदास, पद्मावत जायसी, जयशंकर प्रसाद आदि। कुछ महाकाव्य प्रमुख है।

गीतिकाव्य

गीतिकाव्य – गीतिकाव्य का अर्थ है– गाया जाने वाला काव्य, किंतु प्रत्येक गाये जाने वाले काव्य को हम गीतिकाव्य नही कह सकते जिस गीत में काव्य अनुभूति भाव तथा संगीतमकता होती है।

गीत तथा संगीत का मानव जीवन मे बहुत महत्व है। एक आबोध शिशु भी संगीत का स्वर लहर सुनकर रोना भूल जाता है। हमारे देश मे लोक गीतो की परम्परा आदि काल से चली आ रही है।

लौकिक गीत के प्रकार - वैदिक गीत, लोकगीत

१ मार्ग गीत और

देशी गीत मार्ग गीत मे शास्त्रीय परम्परा का निर्वाह होता है। परन्तु जिस गीतों को लोग अपनी शैली अथवा रुचि के अनुसार गाते है। उन्हे देशी गीत कहते है।

गीत का अर्थ तथा स्वरूप

गीतिकाव्य को प्रगतिकाव्य भी कहा जाता है यह एक नवीनतम् तथा संस्कृत विधा है। भारत के साहित्य शास्त्र मे गीत शब्द प्राचीनतम मे प्रयोग मिलता है।

'गीतम् सन्दिव गायनो'
और अमर कोष मे लिखा गया है।

" गीत गान निमे समा "

इसमे एक बात तो स्पष्ट हो जाती है प्राचीन काल मे गीत शब्द का उल्लेख मिलता है परन्तु गीतिकाव्य शब्द का उल्लेख नही मिल जाता है। ऋग्वेद की उक्ति द्वारा गिये प्रकाश डाला गया है —

अर्थात् वो "गीर्भि वस्ले वो हे अब्ज सीमहि" मे हम गीत मे बाधते हु।